

का दिन और १५ रोज की रात होती है। वहाँ न वायु है, जल। १५ दिन तक धूप पडने से वहाँ गरमी २१२ दर्जे की हो जाती है और १५ दिन रात रहने में वहाँ मरदी २०० दर्जे से नीचे चली जाती है। आकर्षण शक्ति बहुत कम होने की वजह से वहाँ कार्बन डायोक्साइड जैसी भारी गैसों ही रह सकती हैं, जिस में कोई प्राणी या पौदा जिन्दा नहीं रह सकता। चन्द्रमा निरन्तर हमारी पृथ्वी के इर्द गिर्द चक्कर लगाता रहता है। वह हमारी पृथ्वी से २, २०, ००० मील दूर है।

सूर्य पृथ्वी से बहुत बड़ा—~~१०६ गुना~~—बड़ा है। १३ लाख ज़मीनें सूरज के अन्दर समा सकते हैं। वह पृथ्वी से ६ करोड़ ३० लाख मील दूर है। ६० मील प्रति घंटे की चाल से निरन्तर चलने वाली मोटर १७५ वर्षों में सूर्य तक पहुँचेगी। सूर्य की रोशनी की किरणें एक सैकड़ में १ लाख ८६ हजार मील सफ़र तय करती हैं। इस हिसाब से सूरज की रोशनी जमीन तक ८ मिनटों में पहुँचती है।

वैज्ञानिक कहते हैं कि सूर्य आग का एक प्रचण्ड गोला है, जिस में लाखों मील लम्बे आग के फुडारे छूट रहे हैं। किसी जमाने में सूर्य इसे से भी बहुत बड़ा और बहुत गरम था। उसकी आयु अनुमान से ८० खरब साल बताई जाती है। इस अरसे में उसने अपना बहुत सा भार और बहुत सी गरमी छोड़ दी है। पहले वह यदि १०० मन था, तो आज १ मन रह गया है।

सूर्य को केन्द्र मान कर पृथ्वी इस के चारों ओर निरन्तर घूमती है। प्रति सैकण्ड १८ $\frac{1}{2}$ मील की गति से घूमती हुई वह एक वर्ष या ३६५ दिन में सूर्य की पूरी परिक्रमा कर लेती है। सूर्य एक स्थिर ग्रह है, जो अपनी परिधि पर ही घूमता है। पृथ्वी

की तरह सूर्य के आस-पास दूसरे भी बहुत से ग्रह घूमते रहते हैं। बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृद्धस्पति, शनिश्चर, यूरेनस और नेपच्यून ये मुख्य ग्रह हैं। चन्द्रमा की तरह बहुत से उपग्रह और छोटे-छोटे तारे भी सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं। हमारे सूर्य के चारों ओर घूमने वाले ग्रहों, उपग्रहों और छोटे छोटे तारों—सब को मिलाकर सौर मण्डल कहते हैं।

इस अद्भुत और महान विश्व में केवल एक ही सौर-मण्डल नहीं है। हमारे सूर्य और सौर मण्डल के अतिरिक्त दूसरे भी अनेक सूर्य और उनके साथ ग्रह, उपग्रह और करोड़ों अन्य तारागण हैं। सब गतिशील हैं। इन में से बहुत से हमारी पृथ्वी की अपेक्षा भी अरबों साल पुराने हैं। बहुत से अपनी आयु समाप्त कर चुके हैं और बहुत से जन्म लेंगे। तारों के बहुत घने पुंजों को नीहारिका कहते हैं। ये अभी तारे या ग्रह नहीं बने, ये अभी चमकीले बादलों के रूप में हैं, लेकिन ठोस होने पर ये भी सूर्य, ग्रह या नक्षत्र बन जावेंगे। इन नीहारिकाओं की संख्या करीब २० लाख तक गिनी गई है। इनमें से कई तो हमसे इतनी दूर हैं कि इनके प्रकाश को हम तक पहुँचने में करोड़ों और अरबों साल लग जात है। उनकी दूरी घसाने के लिए 'प्रकाश वर्षों' का नाप बनाया गया है। प्रकाश १ लाख ८६ हजार मील सेकंड की चाल से चलता है। इस गति से वह एक साल में जितना फैमला तय करेगा वह एक 'प्रकाश-वर्ष' का फासला पड़ा जाता है। जमीन से जो सबसे समीप जो निहारिका है वह ८३ लाख प्रकाशवर्षों की दूरी पर है।

परन्तु इतने से ही हम इस अनन्त विश्व की कल्पना नहीं कर सकते। सूर्य का प्रकाश यहाँ ८ मिनट में पहुँचता है। परन्तु ऐसे

इनकी तहे जमीन पर धिछाती जातीं। इन तहों के ऊपर तहे जमती जातीं और इनके दोम से नीचे की तहें और भी चड़ी होती जातीं। इस तरह पृथ्वी के ऊपरी आवरण में उथल-पुथल होती रही। चट्टानों की छान-बीन करके वैज्ञानिक इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि हमारी पृथ्वी को घने हुए २-३ अरब साल गुज़र चुके हैं।

प्र० ४—इस पृथ्वी पर जीवित प्राणी का जन्म कैसे हुआ और मनुष्य कैसे बना ? इस संबंध में डार्विन का विकासवाद क्या है ?

वैज्ञानिकों के मतानुसार यद्यपि इस पृथ्वी को बने हुए २-३ अरब साल बीत चुके हैं, तथापि जीवन के चित ३० करोड़ वर्ष से पहले न थे। मनुष्य तो बहुत बाद में आया। पृथ्वी की चट्टानों और एक के ऊपर एक तहों की गोज से बहुत-सी वनस्पतियाँ, जल व स्थलचर प्राणियों का पता लगा है। आज ये सब शिली-भूत या पत्थर से (Fossil) पाये जाते हैं। इन सबके अध्ययन से मालूम हुआ है कि जीवित जगत का प्रारम्भ जल में हुआ। अत्यन्त सूक्ष्म पद्म-मात्र जमीन, जल में होन वाली पार्ई और कूकरमुक्ता से विशदित होते होते लाखों सालों में पानी में रहने वाले घोंपे भीगुर आदि की तरह के जन्तुओं की सृष्टि हुई। धीरे धीरे उनमें मेंढक, मछलियाँ, दिपशली मरीखे जल स्थल दोनों जगह विचरने वाले प्राणियों का विकास हुआ। इसके बाद साँप, गोह, मगरमच्छ और फिर दूध पिलाने वाले प्राणी दिग्गम क्षेत्र में आये। पंटे देने वाले प्राणियों का बाद योनिज प्राणियों का विकास हुआ। इनके बाद लोटे लोटे हाथी और घोटे, लंगूर और इसके बाद पन्दर। पन्दर से बनमानुस और इनके बाद

मे पहले लोगों का मानना था कि परमात्मा ने मनुष्य और हर एक प्राणी को जुदा जुदा बनाया है, उनमें आपस में कोई रिश्ता नहीं है । परन्तु डार्विन ने बताया कि प्रारंभ में सब प्राणियों का एक ही वंश है और सब का आदि में पुण्या एक ही रहा होगा । छ. छ. मान-सान पुरनों में प्राणियों की बनावट में विशेष प्रकार का बहुत सूक्ष्म परिवर्तन होता रहता है । जिन प्राणियों की बनावट पृथ्वी पर की भौतिक अवस्थाओं और जलधरों के मुताबिक नहीं होती, वे नष्ट हो जाने हैं । भौतिक परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तन वाले प्राणी बहुत सी पुरनों के बाद नये प्राणियों के रूप में बदलने जाते हैं । पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों के इन परिवर्तनों का रिकार्ड आज भी पृथ्वी की चट्टानों की तहों में सुरक्षित है ।

प्र० ५—पृथ्वी तल के सिवाय प्राणी की पहुँच कहाँ कहाँ तक है ?

वैज्ञानिक इस पृथ्वी से ऊपर तारों में जाने की कल्पना किया करते हैं, लेकिन सच्चाई तो यह है कि इस पृथ्वी और इस समुद्र को भी मनुष्य या इस विश्व के दूसरे प्राणी अभी तक छान नहीं पाये । पृथ्वी पर अनेक ऐसे ऊँचे स्थल हैं, जहाँ मनुष्य का पहुँचना कठिन है । भारत का हिमालय इस ससार में सब से ऊँचा पहाड़ है । इसकी सबसे ऊँची चोटी गौरीशंकर (माउण्ट एवरेस्ट) समुद्र-तल से २९१४१ फीट ऊँची है । इसकी दूसरी चोटियाँ भी ऊँची नहीं हैं । काचन जंगा २८२२५ फीट, धवलगिरि २६७६५ , नंगा पर्वत २६६२० फीट और नन्दा देवी २५६४५ फीट

ऊँची है। हिमालय के बाद सबसे ऊँचा पहाड़ दक्षिणी अमेरिका के चिली देश में है, जिसकी चोटी २२८३४ फीट है। गौरीशंकर की चोटी पान्त तक भी वैज्ञानिकों के लिए अजेय रही है। पची तक ४ मील से ऊपर नहीं चढ़ सकते।

समुद्र-तल के बहुत नीचे भी प्राणी नहीं जा सकते। डुबकी की पोशाक पहन कर भी मनुष्य ३०० फीट से नीचे नहीं जा सका। ग्रीनलैंड की हेल मछली ४८०० फीट तक नीचे जाती है। नीचे जाने पर समुद्र के पानी का बोझ भी अधिक और असह्य होता जाता है। बहुत नीचे रहने वाले प्राणियों के रक्त में हवा बहुत दबाव से भरी होती है और वे पानी का बोझ सहार लेते हैं। इनके पानी के ऊपर लाने पर ऊपर का दबाव हट जाने से उनके अन्दर की हवा इतने जोर से फैलती है कि मछलियाँ फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाती हैं। भूमि-पृष्ठ के ऊपर ७ मील और समुद्र-तल से ७ मील नीचे—इस १४ मील में ही प्राणी जगत् का निवास है।

प्र० ६—पृथ्वी का क्षेत्रफल कितना है? इसमें कितना स्थलभाग है और कितना जलभाग? कितनी उपजाऊ भूमि है?

पृथ्वी का क्षेत्रफल १६,६४,५०,००० वर्ग मील है। इसमें एक हिस्सा स्थल और तीन हिस्से जल हैं अर्थात् ४,५५,००,००० वर्ग-मील स्थल और १४,१०,५०,००० वर्गमील जल। स्थलभाग में भी १० लाख वर्गमील नदियाँ और झीलें हैं। दूसरी ओर समुद्र के अन्दर भी १६ लाख वर्गमील द्वीप हैं।

३० लाख वर्गमील उपजाऊ भूमि है। १ करोड़ ६० लाख

सारे संसार में एक चौथाई पृथ्वी और तीन चौथाई जल है। कोई समय था कि हिमालय, ऐल्प्स आदि पहाड़ भी समुद्र में थे। संपूर्ण भारत और यूरोप का भारी भाग भी जलमग्न था। आज-कल पृथ्वी पर बड़े बड़े समुद्र पाँच हैं:—

१—प्रशान्त महासागर, २—अटलांटिक महासागर, ३—हिंद महासागर, ४—उत्तरी महासागर, और ५—दक्षिणी महासागर।

अकेला प्रशान्त महासागर संपूर्ण स्थलभाग के बराबर है। इसका अधिकांश भाग १२००० से १८००० फीट गहरा है और एक स्थान पर तो ६ मील से भी अधिक गहरा है। वहाँ गौरी-शकर की चोटी भी डूब सकती है।

अटलांटिक की औसत गहराई १० हजार फुट है। इसका किनारा बहुत कटा फटा होने के कारण इसके किनारों पर बहुत बन्दरगाह हैं।

उत्तरी और दक्षिणी महासागर अधिकांश निर्जन और हिमाच्छादित हैं, हालांकि उत्तरी समुद्र में थोड़ा बहुत व्यापार अवश्य है।

नदियाँ पृथ्वी में बहुत से पदार्थ घोल कर अपने साथ समुद्र में ले जाती हैं। इन पदार्थों में नमक बहुत होता है, इसलिए समुद्रों का पानी नमकीन हो जाता है। समुद्र-जल में नमक होने से पानी भारी हो जाता है और उस पर ज्यादा भारी चीजें भी तैर सकती हैं।

भूमध्यरेखा का गर्म पानी हलका होता है, इसलिए वह ऊपर ही रहता हुआ पूर्व से पश्चिम की ओर जाता है। और वहाँ गर्म पहुँचाया है ध्रुवों का ठंडा जल भारी होकर नीचे रहता है। समुद्र की धाराओं का यह निरन्तर प्रवाह ही इंग्लैंड और उत्तरी यूरोप के लोगों को भीषण सर्दियों से बचाता है।

प्र० १२—सम्पूर्ण पृथ्वी के स्थल भागों का
क्षिप्त परिचय भी दीजिये ।

संपूर्ण पृथ्वी के स्थल भाग को निम्नलिखित पाँच बड़े बड़े
महादेशों में विभक्त किया गया है—१. एशिया, २. अफ्रीका,
३. अमरीका ४. यूरोप और ५. ओशनिया । इनके अतिरिक्त उत्तरी
और पश्चिमी ध्रुवों का स्थलभाग, जिसका विस्तार लगभग ५०
लाख वर्ग मील है, निर्जन पड़ा है । कुल पृथ्वी की आबादी
करीब २ अरब है ।

एशिया—एक अरब से अधिक आबादी वाला एशिया सब
में बड़ा महादेश है । इसका क्षेत्रफल पौने दो करोड़ वर्गमील है ।
एशिया धर्म और सभ्यता का जन्मदाता है । ससार के सभी
बड़े धर्म—हिन्दू, बौद्ध, ईसाई और इस्लाम एशिया में ही उत्पन्न
हुए हैं । रेशम, चाय, छापे की विधि, बारूद, गणित और
चिकित्साशास्त्र आदि भी एशिया की उपज हैं । आज इसकी
हालत अच्छी नहीं है । इसके बहुत से प्रदेश पर यूरोप वालों का
अधिकार है, समस्त एशिया में जापान ही एक ऐसा उन्नत देश है,
जो यूरोपीय देशों का मुकाबला कर सकता है । लेकिन अब
हालत बदल रही है । भारत स्वतन्त्रता के लिए युद्ध कर रहा है ।
चीन, टर्की, ईरान, अफगानिस्तान सभी देशों में नवीन जागृति के
चिह्न दिखाई दे रहे हैं । कुछ समय पूर्व एशिया की समस्त
जातियों को एक करने का पारस्परिक आन्दोलन भी चला था,
लेकिन चीन में ही दूसरे एशियाई देश जापान की लूट-खसोट के
कारण यह आन्दोलन खतम हो गया है ।

यूरोप—यह यद्यपि पृथ्वी के संपूर्ण स्थल भाग का चौदहवा

अमरीका—पनामा का जल मार्ग अमरीका को उत्तरी और दक्षिणी अमरीका में विभक्त करता है। उत्तरी अमरीका में कैनाडा, संयुक्त राष्ट्र और मैक्सिको है। दक्षिणी अमरीका में कई स्वतन्त्र राज्य हैं। कोलम्बस ने यूरोप वालों को इस महाद्वीप का परिचय दिया था। तब से बहुत से यूरोपियन आकर यहाँ बसने लगे। लेकिन १८२३ में संयुक्त राष्ट्र के प्रैज़िडेंट मि० मुनरो ने यह घोषणा की थी कि अब कोई भी यूरोपियन अमेरिका में उपनिवेश नहीं बना सकेगा और न यहाँ हस्ताक्षेप कर सकेगा। इसी को 'मुनरो सिद्धान्त' कहते हैं।

ओशनिया—इसके दो मुख्य भाग आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड हैं। इसका क्षेत्रफल यद्यपि कुल स्थल भाग का १५ फ़ी सदी है, परन्तु आबादी समार की कुल आबादी की १ फ़ी सदी है।

प्र० १३—आकृति विज्ञान की दृष्टि से मानवजाति के कितने भेद हैं और कौन कौन से ?

*यो तो सम्पूर्ण प्राणिजगत् की उत्पत्ति ही प्रारम्भ में एक नसल से हुई—मनुष्य चिपांजी या वनमानुस का ही तो वंशज है—तथापि शरीर की आकृति, चेहरे की घनावट आदि में अन्तर के आधार पर मानवजाति के कई भेद किये जा सकते हैं। मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :—

(१) फ़ारेशियन, (२) मंगोल और (३) एथियोपिक।

(१) फ़ारेशियन—इस जाति के भी कई उपविभाग हैं। नार्डिक (नॉर्वे स्वीटन के लोग, उत्तर पश्चिमी यूरोपियन, दुर्द और अज़गान) एलपाइन (एल्प्स पहाड़ के प्रान्तों के निवासी) मध्य यूरोप, आर्मीनिया, भूमध्यसागरतटवर्ती भूरे रंग और लम्बी खोखड़ी बाले, दक्षिण यूरोप तथा अरब के लोग और भारत के द्रविड। भाषा के

यों तो आज बहुत से एशियानिवासी और ब्रिटेन, फ्रांस आदि में रहने वाली जातियां सब काफेशियन ही हैं, फिर भी यूरोप की गोरी जातियां बहुत उन्नत हैं। गोरी जातियों के उन्नत व सभ्य होने के दो मुख्य कारण हैं—एक तो यह कि उन्हें आवश्यक प्राकृतिक साधन प्राप्त हैं। दूसरा कारण यह है कि पश्चिमी यूरोप में खाद्य सामग्री के अभाव के कारण मछलियों के शिकार व व्यापार के लिए उन्होंने समुद्रों में घूमना प्रारंभ किया। व्यापार, ससार की यात्रा तथा विविध जातियों में मिलने जुलने के कारण विज्ञान का विकास हुआ और औद्योगिक क्रान्ति होने पर वे वर्तमान युग के मुखिया बन गये। अब शेष जातियां भी उनकी सहायता पर आती जा रही हैं।

प्र० १५—आज के युग में अत्यन्त आवश्यक कृषिजन्य, धातवीय और अधातवीय खनिज पदार्थ कौन २ से हैं ?

कृषिजन्य—जल-वायु और भूमि की विभिन्नता के कारण प्रलग अलग देशों में विविध प्रकार की वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। अत्यन्त आवश्यक पदार्थों में सबसे प्रमुख स्वभावतः गेहूँ व दूसरे प्रजात, दूध, मांस, मक्खन, खाद्य, काफी, तम्बाकू, आलू वगैरे वाद्य पदार्थ हैं। वानस्पतिक तेल और विशेष कर सरसो, तारामोरी, नारियल, तिनौला, भूंगफली, जलसी, ताड़ व जेतून के तेलों व विविध व्यासायिक द्रव्यों में उपयोग बहुत बढ़ जाने से वे बहुत महत्व के माने जाने लगे हैं। तेल के बाढ़ कपड़े बुनने के काम करने वाले रुई और रेशम आदि रेजेदार द्रव्यों का नम्बर आठ। रुई व व्यापार दुनिया में सब पदार्थों से ज्यादा है। रेशम

भी कुछ बरसों से कपड़ा बाहर भेजने लगा है । संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने लिए ही कपड़ा तैयार करता है । कुछ समय तक इंग्लैंड ही इस व्यवसाय में सब का अग्रणी था, लेकिन अब जापान और भारत भी अपनी सस्ती मजदूरी की वजह से इंग्लैंड के प्रतिस्पर्धी बन गये हैं । इसने इंग्लैंड के व्यवसाय को काफी धक्का लगा । १९१४ में वह ७०,००० लाख गज कपड़ा विदेशों को भेजता था, परन्तु अब सिर्फ २०,००० लाख गज कपड़ा बाहर भेजता है । वर्तमान युद्ध में व्यस्त होने के कारण उसका यह व्यवसाय और भी कम हो गया है । भारतीय मिलें प्रतिवर्ष ४०,००० वर्ग गज कपड़ा तैयार कर रही थीं, जो कि इंग्लैंड की कपड़ों की उत्पत्ति के बराबर था । इतने पर भी युद्ध से पहले भारत में विदेशी कपड़ा पर्याप्त मात्रा में आता था । वर्तमान महायुद्ध व जापान बाहर से आने वाला कपड़ा बहुत कम हो गया है, और भारतीय कारखाने न सिर्फ अब अपने लिए वस्त्र तैयार कर रहे हैं, बल्कि युद्ध के लिए भी बहुत सा माल तैयार कर रहे हैं ।

प्रश्न १८—फलों और मांस के व्यापार के संबंध में आप क्या जानते हैं ?

जहाजों में सर्वस्वनों के रिगज में फलों का व्यापार बहुत बढ़ गया है । आम भारतवर्ष में और कुछ अफ्रीका में होता है । काश्मीर और अमरीका में सब, ऐरट और बैस्ट इन्डोज व पश्चिमी भारत में पेंला बहुत होता है । फोटा फ्लोचिस्वान ने अंगूर, स्पेन व नामूर में सन्तरा खपता होता है ।

दुनिया में हर साल बरीद एवं खरब साठहवीं २४ खरब पौण्ड मादनी पकती जाती है । जापान सब से अधिक महत्व पकता है । उसके बाद संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ।

भी कुछ घरों से कपड़ा बाहर भेजने लगा है । संयुक्त राष्ट्र अमे-
रीका अपने लिए ही कपड़ा तैयार करता है । कुछ समय तक
इंग्लैंड ही इस व्यवसाय में सब का अप्रणी था, लेकिन अब जापान
और भारत भी अपनी सस्ती मजदूरी की वजह से इंग्लैंड के प्रति-
स्पर्धी बन गये हैं । इसने इंग्लैंड के व्यवसाय को काफी धक्का
लगा । १९१४ में वह ७०,००० लाख गज कपड़ा विदेशों को
भेजता था, परन्तु अब सिर्फ २०,००० लाख गज कपड़ा बाहर
भेजता है । वर्तमान युद्ध में व्यस्त होने के कारण उसका यह व्यव-
साय और भी कम हो गया है । भारतीय मिलें प्रतिवर्ष ४०,०००
वर्ग गज कपड़ा तैयार कर रही थीं, जो कि इंग्लैंड की कपड़ों की
उत्पत्ति के बराबर था । इतने पर भी युद्ध से पहले भारत में विदेशी
कपड़ा पर्याप्त मात्रा में आता था । वर्तमान महायुद्ध के कारण
बाहर से आने वाला कपड़ा बहुत कम हो गया है, और भारतीय
कारखाने न सिर्फ अब अपने लिए वस्त्र तैयार कर रहे हैं, बल्कि
युद्ध के लिए भी बहुत सा माल तैयार कर रहे हैं ।

प्रश्न १८—फलों और मांस के व्यापार के संबंध में
आप क्या जानते हैं ?

जहाजों में सर्दियों के रिवाज में फलों का व्यापार बहुत बढ़
गया है । आग भारतवर्ष में और कुछ अफ्रीका में होता है ।
काश्मीर और अमरीका में सब, ईस्ट और वेस्ट इन्डोज व पश्चिमी
भारत में पेला बहुत होता है । फेरा प्रलोचिस्तान में अंगूर, स्पेन
व नागपुर में सन्तरा अच्छा होता है ।

दुनिया में हर साल करीब एक करोड़ डालर की २५ करोड़
पौण्ड मछली पकड़ी जाती है । जापान सब से अधिक मछली
पकड़ता है । उसके बाद संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ।



वाइयो के कारखाने जहरीली गैसे व घम तैयार करते हैं। युद्ध के समय सभी देश स्वावलम्बन की आवश्यकता अधिकाधिक अनुभव करते हैं और यह कोशिश करते हैं कि बाहर से आने वाली वस्तुओं पर आश्रित न रह कर स्वयं ही जिस किसी तरह अपनी जरूरत पूरी कर ली जाय।

प्रश्न २०—सांयोगिक व्यवसायों से आप क्या समझते हैं और इनका स्वावलम्बन नीति से क्या संबंध है?

जीवन के लिए आवश्यक कई पदार्थों के लिए प्रत्येक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र पर निर्भर रहना पड़ता है पर प्रत्येक राष्ट्र स्वावलम्बनी बनने के लिए बाहर से आने वाली वस्तुओं की पूर्ति उसी के अनुरूप कोई दूसरी कृत्रिम वस्तु बना कर करना चाहता है। ऐसे कृत्रिम उपायों तथा मिश्रण द्वारा बनाये गये वस्तुओं के व्यवसाय को सांयोगिक व्यवसाय कहते हैं। पिछले १०—१२ सालों में इस दिशा में बहुत उन्नति हुई। जर्मनी ने टीन और निकल की बजाय अलुमीनियम, मैग्नेशियम और जस्त व विविध प्रकार के मिश्रणों का उपयोग करना शुरू किया है। रेशम, ऊन आदि की जगह अब नकली रेशम और नकली ऊन तैयार की जाने लगी है। जर्मनी, इटली और जापान ने इस दिशा में बहुत उन्नति की है। लकड़ी के भूसे से हजारों टन नकली ऊन तैयार होने लगी है। मछली के छिलकों से ऐसा मसाला तैयार हुआ है, जिसमें कपड़े पानी में गीले नहीं होते। नकली जूट भी जर्मनी में बन गया है। रासायनिक खाद ही नहीं, कोयले और अलकोहल से पेट्रोल निकालकर अनेक राष्ट्र अपनी तेल की कमी पूरी कर रहे हैं। नकली रब

पैदावार उठाने के कारण घट रही है। इसी तरह दूसर भी अनेको प्राकृतिक माधनों का दिल खोल कर खर्च हो रहा है। और इस के विपरीत जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि ५०० वर्ष बाद आज से ५०० गुना आदमी इस पृथ्वी पर हो जावेगे। इसलिए वैज्ञानिक यह चिन्ता अवश्य करने लगे हैं कि कहीं प्रकृति का यह महान् भण्डार समाप्त न हो जाय। इसके उपाय के लिए भी वे प्रगतिशील हैं। कोयला और मिट्टी के तेल की बजाय पच सदा चलने वाले जलप्रपातों से बिजली पैदा कर कारखाने चलाये जा रहे हैं। सूर्य की गरमी से भी बिजली निकालने की संभावना पर विचार किया जा रहा है। खेती की पैदावार पर नियंत्रण के साथ-साथ सन्ताननिग्रह की शिक्षा का भी प्रचार बढ़ रहा है। बहुत से रासायनिक कृत्रिम खाद्य द्रव्य तथा व्यावसायिक द्रव्य तैयार किये जा रहे हैं। पुराने पशुओं, पक्षियों की जीवनरक्षा और बड़े बड़े जंगलों का निर्माण फिर शुरू होने लगा है। मनुष्य की आविष्कार बुद्धि को देखते हुए यह आशा करनी चाहिये कि वह भविष्य की समस्याओं का भी कोई फल निकाल लेगा।

प्र० २४—राष्ट्रसंघ का मूल उद्देश्य क्या था और वह उस में सफल क्यों न हो सका ?

गत यूरोपियन महायुद्ध के समाप्त होने के बाद जिस दिन चारसाई की संधि पर हस्ताक्षर हुए, उसी दिन १० जनवरी १९२० को राष्ट्रसंघ का जन्म हुआ। इसका उद्देश्य युद्ध के बर्तन-आपसी झगड़ों को दानवीत द्वारा हल करना था। इसका मूल-भूत सिद्धान्त यह था कि यदि कोई राष्ट्र लोकमत की परवाह न कर

ना नहीं थी। वह किसी राष्ट्र की वास्तविक जाँच तक नहीं कर
सकता। सभी राष्ट्र अपने को पूर्ण स्वाधीन मानते हैं, सघ
भुत्वहीन संस्था ही रही।

परन्तु राजनैतिक दृष्टि से न सही, सामाजिक दृष्टि से सघ ने
अवश्य उपयोगी कार्य किया है। विभिन्न देशों में सामाजिक
पुधार, अफीम व औरतों के व्यापार पर नियंत्रण, मजदूरी की
स्थिति, स्वास्थ्यसुधार आदि के बारे में उमने उल्लेखयोग्य कार्य
किये हैं। वर्तमान महायुद्ध में भी उसका स्वास्थ्यविभाग युद्ध
के कारण फैलने वाले रोगों से यूरोप को बचाने के लिये एक
योजना तैयार कर रहा है।

**प्रश्न २५—क्या राष्ट्रसंघ की असफलता से अखिल
राष्ट्रसंघ का आदर्श नष्ट हो जायगा ?**

आज के पच्चीस सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन
में आपसी सम्बंधों को निर्धारित करने वाली और उनका भली
भाँति नियंत्रण करने वाली संस्था की आवश्यकता बराबर अनुभव
की जा रही है। फ्रांस के प्रधान मन्त्री दलादिये ने युद्ध के बाद
यूरोपीय राष्ट्रसंघ (फ़ेडरेशन) का प्रस्ताव पेश किया था। ब्रिटेन
के प्रधान मन्त्री ने ब्रिटिश व फ़्रेंच साम्राज्य को मिला कर एक
करने का प्रस्ताव रखा था और आज जर्मनी व इटली भी सब
राष्ट्रों की एक 'नयी व्यवस्था' बनाने के लिये उत्सुक हैं बशर्ते
कि तमाम राष्ट्रों पर उनकी प्रभाव स्वीकार कर लिया जाय।
परन्तु इस प्रकार की व्यवस्थाएँ राष्ट्रसंघ के पवित्र उद्देश्य में
सहायक नहीं हो सकती। इसके लिए परस्पर समानता भावना
और सहानुभूति का बनावरण आवश्यक है।

अल्पसंख्यक जाति में असंतोष उत्पन्न हो जाता है। अधिकांश राष्ट्रों में विविध जातियों, धर्मों और भाषाओं के संबंध की विभिन्नताएँ मौजूद हैं। इसलिए इस समस्या का महत्त्व भी अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है। राष्ट्रसंघ ने अल्पसंख्यक जातियों की रक्षा के लिए निम्न सिद्धान्त तय करके उन्हें गारंटी दी थी —

(१) सरकारी नौकरियाँ, या डिमियाँ और उपाधियाँ देने में कोई भेद-भाव न रखा जायगा। (२) अल्पमत जातियों को सभा संगठन का अधिकार रहेगा। (३) खेती बाड़ी या दूसरे धंधों में उन से कोई भेद-भाव न किया जायगा। (४) अपने व्यवसाय पर धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना का अधिकार अल्पसंख्यक जातियों को होगा।

ये नियम और आश्वासन बहुत अच्छे हैं, लेकिन परस्पर अविश्वास और सदेह के कारण अल्पसंख्यकों को संतोष नहीं होता। भारत में भी यही हाल हुआ। कराची में भारतीय कांग्रेस ने अल्पसंख्यक जातियों के धर्म, भाषा, सांस्कृतिक रक्षा तथा सरकारी नौकरियों में समान अधिकारों की रक्षा को घोषणा की थी, परन्तु इससे भी समस्या हल नहीं हुई।

प्र० २८—मध्य यूरोप तथा दूसरे देशों में आज अल्पसंख्यक जातियों की समस्या ने क्या रूप धारण कर लिया है ? रूस ने अपने विशाल राज्य में इस समस्या का हल कैसे किया ?

वार्साई की संधि द्वारा जर्मन जाति की बहुत बड़ी संख्या को जर्मन राष्ट्र से अलग कर दिया गया था। विभिन्न राष्ट्रों में सम्मिलित जर्मन अल्पसंख्यकों के नाम पर ही हिटलर ने

‘निस्ट इंटरनैशनल की’ स्थापना किस ने की और वह कितने रूप से होकर गुजरी है ?

मजदूरों को पूँजीपतियों द्वारा शोषण से बचाने के लिए १८३४ में कार्ल मार्क्स ने संसार भर के मजदूरों की एक संस्था की स्थापना की थी । इसका उद्देश्य था—“संसार भर के मजदूरों, एक हो जाओ और पूँजीवाद की जंजीरो को उतार फेंको ।” यह संस्था प्रथम इंटरनैशनल कहाती है । लेकिन यह संस्था १२ साल से अधिक न चल सकी । १८८६ में फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति की शताब्दि-समारोह के समय फ्रांस में दूसरी इंटरनैशनल संस्था बनाई गई, लेकिन १९१४ की लड़ाई में मजदूरों का युद्ध के प्रति रुख क्या हो, इस पर मतभेद होने से यह संस्था भी टूट गई । १९२१ में इसी को लंडन में पुनरुज्जीवित करने की कोशिश की गयी । १९१६ में रूस की क्रान्ति के बाद एक दर्जन देशों के प्रतिनिधियों ने सास्त्रो ज्ञातीय-संघ (थर्ड इंटरनैशनल) या कम्युनिस्ट इंटरनैशनल कायम की, जिसका संक्षिप्त नाम ‘कमिंटर्न’ भी है । इसका उद्देश्य मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों का प्रचार तथा सब राष्ट्रों में क्रान्ति परफे मजदूर-विस्तार-राज्य कायम करना है ।

ब्राट्स्की के दल ने एक चौथी इंटरनैशनल कायम की, जिसे प्रीम इंटरनैशनल कहते हैं । यह कमिंटर्न और रूस के वर्तमान शासन दोनों से विरुद्ध है । ब्राट्स्की की मृत्यु से यह दल निर्बल हो गया है ।

प्रश्न २२—निर्वासित शरणार्थियों ने आप क्या समझते हैं और इनकी समस्या क्या है ।

रंगरूप और जातिभेद के कारण पारस्परिक विद्वेष ने अनेक नई भीषण समस्याएँ पैदा कर दी हैं। गोरी जातियाँ, काली, भूरी और पीली जातियों से और नीग्रो तथा रेड इंडियनों से अत्यन्त घृणा करती हैं, इस कारण उन्हें पर्याप्त जुल्म सहने पड़े हैं परन्तु जाति-विद्वेष की सघ से बड़ी मिसाल यहूदी-विरोधी आन्दोलन है।

यहूदी जाति संस्कृति, विद्या, व्यवसाय और आर्थिक दृष्टि से बहुत उन्नत होती हुई भी आज बेबरबार है, उसका अपना कोई देश नहीं है और दर दर भटक रही है। इन की संख्या करीब १ करोड़ ६६ लाख है। पहले ईसाइयों और यहूदियों का विरोध धार्मिक था, परन्तु पीछे से यहूदियों के बहुत अधिक सम्पन्न हो जाने से उत्पन्न ईर्ष्या और उन्हें अनार्य-वंशी मानने से यह विरोध राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक भी हो गया। हर हिटलर ने अपनी आर्य जाति के रक्त को शुद्ध रखने के नाम पर बहुत से यहूदी-विरोधी कानून बनाये हैं। उन्हें नागरिकता के अधिकारों से वंचित कर दिया गया है, वे अपना संगठन नहीं बना सकते, नौकरी नहीं कर सकते, व्यापार-व्यवसाय नहीं कर सकते, अखबार नहीं चला सकते और कोई जायदाद नहीं रख सकते। जर्मनो और यहूदियों के अंतर्जातीय विवाह भी गैरकानूनी करार दिये गये हैं। स्कूलों में अनार्य यहूदी आर्यों के साथ नहीं बैठ सकते। पहले पहले यह यहूदी विरोध-सिर्फ जर्मनो तक सीमित था, लेकिन पीछे से जर्मन-प्रभाव में आने के कारण आस्ट्रिया, पोलैण्ड, जैकोस्लावेकिया, रुमानिया, हंगरी और इटली में भी यहूदी-विरोधी कानून बनाये गये हैं। फ्रांस में मार्शल पेता ने भी हाल में यहूदियों का विरोध शुरू कर दिया है।

अपनी अपनी जाति, देश या सम्प्रदाय विशेष में एकता स्थापित करके उसकी महत्ता बढ़ाना ही है। पान अमेरिकन यूनियन का हेतु यह है कि उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकन सब राज्यों को एक-सूत्र में संगठित कर उसे यूरोपियन प्रभाव से मुक्त किया जाय। पान जर्मन आन्दोलन की जर्मन जातीय भावना सब में उप है। यूरोप के कुछ देशों के जर्मन भाषा-भाषी अन्तर प्रान्त जो हर टिटलर से जर्मनी में मिला ही लिये हैं और दालेण्ड, फ्लेजियम, लक्समबर्ग, मिडजरलैण्ड के जर्मन भाषा-भाषी प्रान्तों को भी जर्मनी अपने में मिलाने के लिए अत्यन्त उत्सुक है। पान अरब आन्दोलन के नेता समस्त अरब राष्ट्रों—साउदी अरब, ईराक, सीरिया, फिलिस्तीन और ट्रान्सजार्दन आदि को एक साथ में सम्मिलित करना चाहते हैं। सिथ और ईराक को भी पठानुभूति उस का साथ है। इन उप नेता तो सोरबियों से लेकर ईरान की ग्राही तक एक आरब-साम्राज्य का स्वप्न ले रहे हैं। पान-इस्लामिज्म के मूल में इस्लाम और मुसलमानों का एक जातीय भावना काम कर रही है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण सुलतान और खलीफा अब्दुल हकीम केनीय ने अपना पञ्चाव बढ़ाने के लिए दिया था, मुसलमानों का पन्द्रह खलीफा पञ्चाव में यह आन्दोलन भी मिश्रित हो गया क्योंकि इस पुनर्गठन करने के कई प्रयत्न किये गये। लिबि इत्यादि आन्दोलन का यह बड़ा भारी परिणाम रहा कि अफिरम देशों में आजादी का परम्परा राजनीतिक और आर्थिक भाषीय की भावना पैदा हो गई।

परन्तु २५—संसार में घौली जाने वाली दूसरी भाषाएं कितनी हैं। इन प्रमुख भाषाओं का विवेक भी कीजिये।

डिनेमाइट का अविष्कार करने वाले स्वीडन के प्रसिद्ध
नानिक आलफर्ड नोबल ने मृत्यु समय बड़ी भारी धनराशि छोड़
: यह वसीयत की थी कि उसके धन से जो सूद मिले, उससे
सार के विशेष व्यक्तियों को पुरस्कार बाँटा जाय। सूद की
मदनी पाँच भागों में बाँट कर रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र,
कृषि, साहित्य के सर्वश्रेष्ठ लेखकों और शान्ति के प्रचारकों
को बाँट दी जाती है। १६०१ में पहला इनाम दिया गया। दो
रतीयों, ठाकुर रवीन्द्रनाथ को गीतांजलि पर और श्री सी वी
न को भौतिक शास्त्र पर इनाम मिल चुका है। रुडयार्ड
किलिंग, रोमारोला, बर्नार्डिशा, अनातोले फ्रांस और गार्सवर्दी
दि को साहित्य पर यह पुरस्कार मिला है।

प्र० ३८—पुस्तकालयों की प्रथा कब से चली है
और आजकल इनका कितना प्रचार है ?

आज प्रायः सभी शहरों में छोटे बड़े पुस्तकालय देखने में
आते हैं, लेकिन वस्तुतः यह रिवाज बहुत पुराना है। पहले मंदिरों
में पुस्तकों का संप्रदाय किया जाता था। प्राचीन असीरिया में मिट्टी
की तख्तियों पर चित्रलिपि लिखी हुई १०००० पुस्तकों का
पुस्तकालय मिला है। यह सार्वजनिक पुस्तकालय था। प्राचीन
मिस्र, रोम, कुस्तुनतुनिया और चीन में भी बड़े बड़े पुस्त-
कालय थे।

यूरोप में आजकल पुस्तकालयों का बहुत अधिक प्रचलन है।
इंग्लैण्ड के ब्रिटिश म्यूजियम में ३३ लाख पुस्तकें, फ्रांस के
बिब्लियोथेक नेशनल में ४४ लाख पुस्तकें, बर्लिन की एक लाइब्रेरी
में ३१ लाख लपेटे हुए ग्रन्थ हैं। इनके अलावा ५०-५० हजार

धनधो द्वारा अपना जीवन-निर्वाह करते थे। लेकिन मशीनोपाकरण हजारों-लाखों 'फारींगरो' का रोजगार छीन लिया। खाने वाले शहरों की प्रधानता बढ़ने लगी, लोग गांव छोड़ कर मजदूरी करने शहर आने लगे और इस तरह वे स्वतन्त्र न बन पाए। फारींगर न रहकर मजदूर बन गये। इन लोगों का जीवन बदल गया। पुराने रीति-रिवाज, जाति-धिरादरी खत्म, पुराना रहन-सहन, सभी कुछ तबदील हो गये। ग्रामों संयुक्त कुटुम्ब-प्रथा नष्ट होने लगी, ग्रामों की खुली हवा, वही सब बन्द हो गये, उनके स्वास्थ्य उनके जीवन और तब उनके धर्म, चरित्र या नीति, पारिवारिक संबंध स्त्री-पुरुषों अधिकार, बच्चों की रक्षा, दीक्षा, सभ विषयों के संबंध में हुए पुराने विचार और पुरानी धारणाएँ सब बदल गईं।

श्रेणी-संघर्ष—मशीनोपाकरण का दूसरा बड़ा परिणाम यह हुआ जैसे-जैसे ग्रामीण और भी ज्यादा ग्रामीण बनने लगे। फारखानों अधिक लाभ वे स्वयं खाने लगे और इस तरह एकत्र की हुई नई शक्ति से वे और भी फारखाने खोलकर मजदूरों की श्रेणी बढ़ाने लगे। सारे देश के धनधे गांवों में फैले हुए हजारों लाखों फारींगरो छिनकर उनकी मलकियत बन गये। कुछ समय बीतने पर मशीनरी की उपेक्षा—मजदूर और पूँजीपति श्रेणी में संघर्ष उत्पन्न हुआ। मजदूर कहने लगे कि पूँजीपति हमारा शोषण करता है। इसी प्रवृत्ति का परिणाम वर्ग-युद्ध है, जो वर्तमान युग बहुत बड़ी समस्या है। साम्यवाद की भावना भी इसी प्रवृत्ति से है। मशीनरी से पूँजीवाद के साथ-साथ साम्राज्यवाद की वृद्धि भी बड़ी, क्योंकि फारखानों का माल रखाने के लिए बड़े बाजारों की पूँजीपतियों की आवश्यकता थी। इस तरह

ज्यों ने ईश्वर का नाम दिया और वह इसकी पूजा करने लगा। शरण, पादरी, मुल्ला आदि धार्मिक उपदेश देने वाली श्रेणी ने हर के नाम पर जो-जो प्रथाएँ चलाई, वे भी धार्मिक वर्तव्य बन गईं। उन्होंने जो कहा उसी पर विश्वास कर लिया गया। जोकि जनता के लिए ईश्वर एक दुर्बोध और अतोन्य वस्तु थी।

लेकिन विज्ञान ने तर्क और परीक्षण की कसौटी पर हर एक वस्तु को कसने की शिक्षा दी है, इसलिए मनुष्य के धार्मिक विश्वास शिथिल होने लगे हैं और वह अन्य विश्वासों से ऊपर उठने लगा है। धार्मिक भावनाएँ और आचरण-सम्बन्धी धार्मिक नियमों की पादन्तिश्री उठती जा रही हैं, धर्ममन्दिरो में लोग कम जाने लगे हैं और ईश्वर विरोधी विचार तथा भी पैदा होने लगे हैं।

रूस, स्पेन और मैक्सिको आदि में ईश्वर और धर्मविरोधी आन्दोलन शुरू हो गया है। भाग्यवादी धर्म से इसलिए विरक्त हैं कि उनके विचार में धार्मिक भावना ने मनुष्य की रजस्र विचार-शक्ति को नष्ट कर दिया है और इनमें जागृत की भावना बनने लगी पाती।

प्रारम्भ में ईश्वर-विरोधी आन्दोलन हुए और पश्चिम भी देखा गया, लेकिन आज यह आन्दोलन भी शिथिल रहने लगा है। वस्तुतः हम के विचार हमें अधिक दृढ़गुल हो चुके हैं कि वे हटाये नहीं जायें। इन आन्दोलन का हमें अत्यन्त प्रभाव है कि लोगों ने पादन्तिश्री और धर्ममन्दिरो से दूर होकर रहने लग गये हैं। मैक्सिको में रेरा (Rera) नाम है जिसमें से सन्तों से बहुत दूरदगार में लोग जाते हैं। कारण है यह आन्दोलन चल रहा है। जर्मनी में भी इन का भी जहाँ-जहाँ ईश्वर के अस्तित्व

स्ताम को मानने वालों की संख्या २० करोड़ के करीब है। ये शिया के विविध देशों के अलावा कुछ यूरोप में भी फैले हुए हैं।

प्रश्न ४३—जातीयता या राष्ट्रीयता का क्या अ-
भाव है और इस प्रवृत्ति का संसार पर क्या प्रभाव पड़ा ?

एक राष्ट्र में रहनेवाले लोगों में समानता और स्वतन्त्रता की भावना ही राष्ट्रीयता है। प्रथम की राज्यक्रान्ति से इस का जन्म हुआ। इसी भावना से प्रेरित होकर अनेक घालघन राष्ट्र दुर्बल साम्राज्य से अलग होकर स्वतन्त्र हो गये। इटली में महान नेता मेजिनी ने भी इसी का संदेश समार को दिया था। स्वराज्यनिर्माण अर्थात् प्रत्येक राष्ट्र अपने आपका राज्य निर्माण करे यह सिद्धान्त इसी राष्ट्रीयता का परिणाम है। आज यह ज़रूर पश्चिम तथा दूसरे भागों में फैल चुकी है। भाषा, साहित्य, धर्म और विशेष कर राष्ट्रीय सीमाएँ राष्ट्रीयता को मजबूत करती हैं।

जर्मनी में इस भाव से हम रूप भी पारणा कर लिया है । जर्मन जातीयता की स्वतंत्रता या स्वयं की विलक्षणता—तत्त्वों—पर अत्यन्त गहरा हो गया है । यह वह रूप सीमा या स्वतंत्रता है ।

प्रश्न ४४—तन्त्ररूपीयता या दिग्गन्धर्व का
आन्दोलन क्या है ?

१. राजाजी का जन्म १८७० ई. में हुआ था।
 २. राजाजी का जन्म १८७० ई. में हुआ था।
 ३. राजाजी का जन्म १८७० ई. में हुआ था।
 ४. राजाजी का जन्म १८७० ई. में हुआ था।

२. प्राचीन यूनान में प्रत्येक राष्ट्रनिवासी को नागरिक नहीं समझा जाता था। दासों, स्त्रियो और अत्यन्त दरिद्रों को नागरिकता के अधिकार प्राप्त नहीं थे। लेकिन आजकल हर एक बालिग को यह अधिकार प्राप्त है। वस्तुतः यूनान के शासन को वर्गतन्त्र शासन (Oligarchy) कह सकते हैं।

आजकल जनतन्त्र के निम्नलिखित चार मुख्य अंग हैं, जिन के आधार पर जनतन्त्र शासनपद्धति चलती है:—

१. प्रतिनिधि सभा—जनता विश्वास योग्य व्यक्तियों को अपना प्रतिनिधि चुनकर उन्हें शासन सम्बन्धी सब प्रश्नों के निर्णय का अधिकार दे देती है। राष्ट्र का स्वामित्व तो जनता के हाथ में रहता है, परन्तु प्रतिनिधि सभा के निर्वाचित सदस्य जनता के प्रतिनिधिरूप से उसका इस्तेमाल करते हैं।

२. उत्तरदायी शासन—प्रतिनिधि सभा के सदस्य भी शासन के विस्तार या दैनिक कार्यों में नहीं जा सकते, इसलिए उन्हीं में से कुछ शासनकर्म या सरकार की मैशीनरी चलाने के लिए मंत्री चुन लिये जाते हैं। यह मंत्रिमण्डल अपने कार्यों के लिए प्रतिनिधि सभा के प्रति उत्तरदायी होता है। यदि किसी कार्य या नीति के कारण वे प्रतिनिधियों का विश्वास खो बैठें, तो उन्हें इस्तीफा देना पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जनता राष्ट्रपति को चुनकर स्वयं उसे शासन के अधिकार देती है।

३. पार्टी या दल—प्रतिनिधि सभा के चुनाव में जनता को अनेक हमीद्वारों में से चुनाव करना पड़ता है। वे हमीद्वार जनता के सामने अपनी कार्य-नीति या सिद्धान्त रखते हैं, जिनको आधारभूत मान कर वे काम करेंगे। इस तरह देश में दो या ज्यादा दल बन जाते हैं, जो विभिन्न नीतियों या सिद्धान्तों

१ जनता के मौलिक अधिकार—प्रत्येक जनतंत्र विधान में जनता के लिखने, बोलने, संगठन और धर्म आदि की स्वाधीनता स्वीकार की जाती है।

२. दो हाउस—अनेक देशों में एक ही प्रतिनिधिसभा होती है, कुछ देशों में दो सभाएँ। ऊपर के हाउस के सदस्य कहीं निर्वाचित और कहीं नामजद होते हैं। पर नीचे का हाउस आम जनता द्वारा चुना जाता है, इसलिए उसे बजट आदि के बारे में अन्तिम अधिकार होता है।

३ मताधिकार—बिना किसी भेदभाव के हर एक बालिग को मताधिकार दिया जाता है, परन्तु कुछ देशों में शिक्षा, संगति आदि की कुछ शर्तें लगा दी जाती हैं। और इस दृष्टि से ऐसे विधान को पूर्ण प्रजातंत्र नहीं कह सकते।

४ गुप्तमत—निर्वाचक किसी प्रकार के बाहरी दबाव में आकर मत न दे, इसलिए गुप्तमत की व्यवस्था की जाती है।

प्रश्न ४७—निर्वाचन-प्रणाली के विविध तरीके क्या हैं?

जनता के मतसमूह के लिए विभिन्न देशों में विविध तरीके प्रचलित हैं। आम सीधा तरीका तो यह है कि—मतदाताओं को जुदा-जुदा निर्वाचन क्षेत्रों में बाँट कर वनसे वमीदवारों के लिए वोट माँगते जाते हैं। जिस वमीदवार को सबसे ज्यादा मत मिले, वही प्रतिनिधि चुना जाता है। परन्तु इससे व्यवस्था के मतदाताओं का प्रतिनिधित्व बतर्क नहीं हो पाता। इसलिए वहीं कहीं सफल वमीदवारों के मतदाताओं की संख्या से अनुपात से पराजित पार्टी के भी कुछ वमीदवार ले लिये जाते हैं। परन्तु

मन्त्री पड़ेगी। पार्लिमेंट के अधिकार अमर्यादित हैं और राजा के अमर्यादित।

ग्रेटब्रिटेन की पार्लिमेंट के दो भाग हैं—हाउस आफ़ कॉमन्स और हाउस आफ़ लॉर्ड्स। हाउस आफ़ कॉमन्स या साधारण सभा ६०५ सदस्य होते हैं, जो २१ साल की उम्र के वालिगों के मतों से चुने जाते हैं। ७०००० की आबादी के पीछे एक सदस्य चुना जाता है। इसी सभा को बजट आदि पास करने का अधिकार है। हाउस आफ़ लॉर्ड्स या रईसी सभा के ७४० सदस्य होते हैं जो वंशानुगत होते हैं या राजा द्वारा मनोनीत। इस सभा में आज़मल विशेष अधिकार प्राप्त नहीं हैं। जब किसी प्रस्ताव को दो भी बर दे, तो भी साधारण-सभा द्वारा तीन बार स्वीकृत होने पर वह स्वीकृत समझा जाता है। रईसी पोरसिम कानून किसी विस्थापन पर विचार को लंबा करने का विधान इस नहीं कर सकती।

साधारणसभा के अध्यक्ष के नेता को राजा प्रधान-मन्त्री करता है और वह दोष मन्त्रिमण्डल का उत्तर करता है। जो राजा की नीति के बाद मन्त्री बन जाते हैं। यह मन्त्रिमण्डल राष्ट्रीय रूप से पार्लिमेंट के प्रति उत्तरदायी होता है। राजा की ओर से महान कायस की जिम्मेदारी मन्त्रिमण्डल की रहती है। यह सब एंग्लो-नॉर्मन्डियन मन्त्रिमण्डल का स्वरूप है। यह मन्त्रिमण्डल का स्वरूप है, अन्वयार्थ राजा पर दे देना है।

कमान्डर-इन-चीफ़ एंड एडमिरल है, जो मन्त्रिमण्डल के ५-५ इतर दोष साधारण सभा के सदस्य को दे देता है। राजा की साधारण सभा के अधिकार हैं। १६२८ के ३ राजा के इतर दोष मन्त्रिमण्डल के दे देना है।

जर्मनी का अस्थायी शासन है । जिस भाग पर जर्मनी का शासन नहीं है वहाँ मार्शल पेता सर्वेसर्वा है । युद्ध के बाद न जाने क्या विधान हो ।

प्रश्न ५०—संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की शासनपद्धति का संक्षिप्त परिचय दो ।

अमेरिका भी पहले इंग्लैंड का उपनिवेश था, लेकिन १७७६ में उसने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी, जिसे ६ साल बाद ब्रिटेन ने भी स्वीकार कर लिया । संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ४६ स्वतन्त्र राज्यों का, जो अपने अपने प्दान्तरिक मामलों में स्वतन्त्र हैं, एक सघ है । इसीलिए उसे संयुक्तराष्ट्र अमेरिका कहते हैं ।

यहाँ शासन कार्य चलाने की जिम्मेवारी मन्त्रिमंडल पर नहीं, प्रेजिडेंट पर है । वही जनता के प्रांत जिम्मेवार होता है । शासनकार्य की सुविधा के लिए सीनेट की स्वीकृति लेकर वह प्रत्येक विभाग का एक एक अध्यक्ष चुन लेता है, जो प्रतिनिधि सभा के प्रति नहीं अपितु प्रेजिडेंट के प्रति जिम्मेवार होता है । प्रेजिडेंट के अधिकार बहुत ज्यादा हैं । सेना का अध्यक्ष भी वही होता है, सीनेट की स्वीकृति लेकर वह सचिव बनता है । उसके नीचे ५ लाख के करीब सिविलियन शासनकार्य चलाने हैं । उसका वेतन ७५ हजार डॉलर वार्षिक है । प्रेजिडेंट का चुनाव ४ साल के लिए परोक्षविधि द्वारा—जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा होता है ।

सं० रा० अमेरिका की प्रतिनिधि सभा दो सदन में भी दो भाग है, एक सीनेट और दूसरा हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स । सीनेट में प्रत्येक राज्य में दो सदस्य होते हैं जिन्हें वहाँ की जनता ६ साल के लिए चुनती है । हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स का चुनाव दो साल

प्र० ५२—पूँजीवाद क्या है और इसका वर्तमान समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

वर्तमान समाज की आर्थिक व्यवस्था पूँजीवाद के आधार पर । पूँजीवाद का सिद्धान्त यह है कि संपत्ति, पूँजी और स्वयंसेवा के साधनों—भूमि, रानो, बड़ी बड़ी मशीनों, मकान और कौनों आदि पर व्यक्ति का अधिकार हो, समाज या सरकार का नहीं । इसका परिणाम यह होता है जो लोग पूँजी के मालिक नहीं हैं,

मेहनत करके गुजारा करते हैं और पूँजी के मालिकों के हाथ अपनी मेहनत बेचते हैं । इस तरह पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजीपति और मजदूर दो श्रेणियाँ बन जाती हैं । इन दोनों श्रेणियों में परस्पर वैरोधी स्वार्थ होने के कारण संघर्ष भी छिड़ जाता है । पूँजीपति आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण ज्यादा से ज्यादा माल पैदा करते हैं, अपना माल बेचने के लिए कीमतें कम करते हैं और जब इससे मुनाफे की दर कम हो जाती है तो मजदूरी कम करने की कोशिश की जाती है । इस तरह दोनों श्रेणियों में युद्ध छिड़ जाता है । सिर्फ इन दो श्रेणियों में ही नहीं, पूँजीपति या पूँजीपति से, पूँजीपति का मजदूरों से और वितरण के क्षेत्र में प्रोता और विक्रेता में भी संघर्ष छिड़ जाता है ।

पूँजीवादियों का कहना है कि इस व्यवस्था में सभी व्यक्ति अपनी अपनी योग्यता का विकास कर सकते हैं, लेकिन वस्तुतः यह वही तरह की अव्यवस्था ही है, जिस तरह की धरातलता में जिसकी लाठी उसकी भैंस चलाती है । पूँजीवाद में बड़े पूँजीपति छोटे पूँजीपतियों को मार भगाते हैं और वे पार्टल या ट्रस्ट बना कर सारे बाजार पर एकाधिकार जमा लेते हैं । इस योजना का

शोषक और शोषित । इन दोनों श्रेणियों का संघर्ष शुरू हो जा है । इस संघर्ष को मिटाने का केवल एक ही उपाय है कि शक्ति के सब साधनों पर समाज का—या उसकी ओर से राज्य अधिकार रहे ।

समाजवाद या साम्यवाद के मूल में यही सिद्धान्त है । उत्पत्ति साधनों पर अधिकार करने के तरीको पर आपस में मतभेद के कारण कई दल बन गये हैं । कुछ लोग शनैः शनैः प्रचार व कानून द्वारा परिवर्तन के पक्षपाती हैं और कुछ मजदूरों संगठित क्रान्ति में । पहली श्रेणी सुधारवादी कहलाती है, जैरे रूस के क्रान्तिकारी । युद्ध के बाद सुधारवादी कुछ न कर सके, इसलिये उनका प्रभाव कम हो गया ।

प्रश्न ५४—समाजवाद (सोशलिज्म) और साम्य-वाद (कम्युनिज्म) में क्या अन्तर है ।

समाजवाद वस्तुतः साम्यवाद की पहली सीढ़ी है । इसमें शक्ति के बड़े-बड़े साधन तो राज्य के अधिकार में रहते हैं, लेकिन बड़े छोटे पूँजीपतियों और छोटे जमींदारों की सत्ता भी रहती । हर कोई अपनी शक्तिभर मेहनत करता है और उसके काम की मात्रा ओर बिस्म के अनुसार उसे मजदूरी मिलती है ।

✽ एंग्लैंड के अधिवांश साम्यवादी सुधारवादी हैं । इनमें से अधिवांश को 'धर्मोसंधवादी' कहा जाता है । इनके विचार में भूमि, कारखानों आदि पर रजामाय राज्य का नहीं, परन्तु धर्मोसंधों (ट्रेड-यूनियनों) का प्राधिकार । राज्य की तो बार्द जरूरत ही नहीं । और काम करने वालों से राजस्व की मेरानरी को बेकार बर धर्मोसंध उस पर अधिकार कर सकता है ।

प्र० ५६—सोवियट यूनियन की शासन पद्धति का संक्षिप्त परिचय दो ?

सोवियट यूनियन भी वस्तुतः संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और स्विट्जरलैंड की तरह अनेक स्वतंत्र राज्यों का एक सघ है। इसमें ११ स्वतन्त्र राज्य (सोवियट सोशलिस्ट रिपब्लिक) सम्मिलित हैं जिन्हें सघ से अलग होने का अधिकार भी है। रूस की व्यवस्था-पिका सभा को सुप्रीम कौंसिल कहते हैं, जिस के दो हाउस हैं। पहली कौंसिल आफ़ यूनियन और दूसरी कौंसिल आफ़ नैशनैलिटीज। पहले हाउस का चुनाव यूनियन के सब नागरिक करते हैं। दूसरे हाउस में ग्यारहों स्वतन्त्र राज्यों की सुप्रीम कौंसिलें अपने प्रतिनिधि भेजती हैं। उक्त दोनों हाउस मिलकर कौंसिल चुनते हैं, जिसमें एक अध्यक्ष, चार उपाध्यक्ष, मंत्री तथा ३१ सदस्य रहते हैं। इस कौंसिल को प्रिसिडियम कहते हैं। विधान में इसके अधिकार बहुत विस्तृत हैं। युद्ध करने, सुप्रीम कौंसिल को भंग करने, मंत्रिमण्डल के फैसले और आजादियों को क़ानून विरुद्ध होने पर रद्द करने के अधिकार इस प्रिसिडियम को हैं। शासन प्रबंध चलाने की जिम्मेवारी 'कौंसिल आफ़ पीपल्स कमिस्सर्स' या मंत्रिमंडल पर है, जिसकी नियुक्ति सुप्रीम कौंसिल करती है। सुप्रीम कोर्ट की नियुक्ति भी इसी कौंसिल द्वारा होती है।

विशेषताएँ—सोवियट यूनियन की शासन-पद्धति की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। वे निम्नलिखित हैं—

विधान की पहली धारा में घोषणा की गई है कि यूनियन मजदूरों और किसानों की सोशलिस्ट हकूमत है। १२वीं धारा में लिखा है कि जो मेहनत नहीं करेगा, उसे खाने को भी नहीं

प्र० ५६—सोवियट यूनियन की शासन पद्धति का संक्षिप्त परिचय दो ?

सोवियट यूनियन भी वस्तुतः संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और स्विट्जरलैंड की तरह अनेक स्वतंत्र राज्यों का एक संघ है। इसमें ११ स्वतन्त्र राज्य (सोवियट सोशलिस्ट रिपब्लिक) सम्मिलित हैं जिन्हें संघ से अलग होने का अधिकार भी है। रूस की व्यवस्था-पिका सभा को सुप्रीम कौंसिल कहते हैं, जिस के दो हाउस हैं। पहली कौंसिल आफ यूनियन और दूसरी कौंसिल आफ नैशनैलिटीज। पहले हाउस का चुनाव यूनियन के सब नागरिक करते हैं। दूसरे हाउस में ग्यारहों स्वतन्त्र राज्यों की सुप्रीम कौंसिलें अपने प्रतिनिधि भेजती हैं। उक्त दोनों हाउस मिलकर कौंसिल चुनते हैं, जिसमें एक अध्यक्ष, चार उपाध्यक्ष, मंत्री तथा ३१ सदस्य रहते हैं। इस कौंसिल को प्रिसिडियम कहते हैं। विधान में इसके अधिकार बहुत विस्तृत हैं। युद्ध करने, सुप्रीम कौंसिल को भंग करने, मंत्रिमण्डल के फैसले और आज्ञाओं को कानून विरुद्ध होने पर रद्द करने के अधिकार इस प्रिसिडियम को हैं। शासन प्रबंध चलाने की जिम्मेवारी 'कौंसिल आफ पीपल्स कमिसेर्स' या मंत्रिमण्डल पर है, जिसकी नियुक्ति सुप्रीम कौंसिल करती है। सुप्रीम कोर्ट की नियुक्ति भी इसी कौंसिल द्वारा होती है।

विशेषताएँ—सोवियट यूनियन की शासन-पद्धति की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। वे निम्नलिखित हैं—

विधान की पहली धारा में घोषणा की गई है कि यूनियन मजदूरों और किसानों की सोशलिस्ट हकूमत है। १२वीं धारा में लिखा है कि जो मेहनत नहीं करेगा, उसे खाने को भी न

हुए इटली की फासिस्ट पार्टी और इटली की शासन-पद्धति का संक्षिप्त परिचय दीजिये ।

फासिज्म लैटिन के 'फासेस' से निकला है, जिसका अर्थ दंड या अधिकार का चिह्न है । १९१६ के बाद जब से मुसोलिनी ने इटली का शासन-सूत्र अपने हाथ में लिया, अपने दल का नाम फासिस्ट रखा और अपने विचारों को 'फासिज्म' का नाम दिया । एक शब्द में कहना हो तो फासिज्म को हम "अत्युग्र राष्ट्रवाद" कह सकते हैं । राष्ट्रीय एकता इस का लक्ष्य है और इस एकता को स्थापित करने के लिए देश में सिर्फ एक दल की स्थापना, राष्ट्रीय शक्ति का अत्यधिक केन्द्रीकरण आवश्यक है । जनतन्त्र की प्रतिनिधिसभा और उसके विविध दलों में फासिज्म विश्वास नहीं करता, क्योंकि उसके अनुसार विविध दल बितड़ावाद को बढ़ा कर राज्य की शक्ति का अपव्यय करते हैं । इसलिए बहुमत की एक ही पार्टी रहनी चाहिए और बाकी सब पार्टियाँ नष्ट हो जानी चाहिए । इस एक पार्टी का लक्ष्य राष्ट्रीय एकता, दलभेद को बर्ष में रखना, श्रेणी युद्ध न होने देना और राष्ट्र के विभिन्न प्रादेशिक स्वार्थों को बढ़ाने न देना होना चाहिए । आर्थिक क्षेत्र में फासिज्म सघात्मक समाज (Corporative Society) में विश्वास करता है । इसका अर्थ यह है कि एक व्यवसाय के मालिक और मजदूर एक संघ या एक 'गिल्ड' में संगठित हो और उसी के द्वारा आपसी झगड़ों को रोकें, ताकि राष्ट्रीय व्यवसाय उत्थित हो सके । अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में फासिज्म शक्तिशाली राष्ट्रों के विस्तार के सिद्धान्त पर जोर देता है । फलतः वह हम साम्राज्यवाद का पोषक है ।

इटली की फासिस्ट पार्टी की मांड कोनिल सद से

तीनों में थोड़ा सा भेद भी है। जर्मनी में हिटलर को जनता ने प्रैज़िडेंट चुना है, फलतः उसे जनता ने स्वयं सर्वोपरि सत्ता दी है, परन्तु इटली और रूस में मुसोलिनी व स्टालिन प्रैज़िडेंट नहीं हैं, वे केवल अपनी अपनी पार्टियों के नेता हैं, इसलिए इन दोनों देशों में जर्मनी की अपेक्षा पार्टी का बोलबाला अधिक है। जर्मनी में अधिकनायकवाद चरम सीमा पर है।

जर्मनी के व्यावहारिक विधान में राष्ट्र की संपूर्ण ज़िम्मेवारी नेता पर है। आर्थिक क्षेत्र में वह संपत्ति के राष्ट्रीकरण के विरुद्ध है, लेकिन संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था पर राष्ट्रीय दृष्टि से राष्ट्र का पूर्ण नियन्त्रण करता है, जो समाजवादियों के राष्ट्रीकरण से किसी प्रकार भी कम नहीं है, इसीलिए कई लोग व्यंग्य से नाज़ियों को 'भूरे बोलशेविक' (नाज़ियों की पोशाक भूरी होती है) कहते हैं।

परन्तु अधिनायको का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। ज्यों ही किसी नेता को किसी असफलता का सामना करना पड़े, वह जनता का सारा विश्वास खो देगा। उसकी मृत्यु होते ही इतना असाधारण व्यक्ति न मिलने से सारी व्यवस्था ताश के पत्तों की शमारत की तरह बिखर जायगी।

प्रश्न ६०—जापान की शासन-पद्धति का संक्षिप्त
 दो।

। में राजा 'परमात्मा का पुत्र' मिला जाता है और
 ीम शक्तियाँ प्राप्त हैं। जनता उसे देवता की तरह पूजती
 ी लोकतंत्र की लहर का प्रभाव काफी स्पष्ट है। वहाँ
 । सभा दो हाउस हैं—हाउस आफ

तीनों में थोड़ा सा भेद भी है। जर्मनी में हिटलर को जनता ने प्रैजिडेंट चुना है, फलतः उसे जनता ने स्वयं सर्वोपरि मत्ता दी है, परन्तु इटली और रूस में मुसोलिनी व स्टालिन प्रैजिडेंट नहीं हैं, वे केवल अपनी अपनी पार्टियों के नेता हैं, इसलिए इन दोनों देशों में जर्मनी की अपेक्षा पार्टी का बोलबाला अधिक है। जर्मनी में अधिनायकवाद चरम सीमा पर है।

जर्मनी के व्यावहारिक विधान में राष्ट्र की संपूर्ण जिम्मेवारी नेता पर है। आर्थिक क्षेत्र में वह संपत्ति के राष्ट्रीकरण के विरुद्ध है, लेकिन संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था पर राष्ट्रीय दृष्टि से राष्ट्र का पूर्ण नियन्त्रण करता है, जो समाजवादियों के राष्ट्रीकरण से किसी प्रकार भी कम नहीं है, इसीलिए कई लोग व्यर्थ से नाजियों को 'भूरे घोलेषेविक' (नाजियों की पोशाक भूरी होती है) कहते हैं।

परन्तु अधिनायकों का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। ज्यों ही किसी नेता को किसी असफलता या सागना करना पड़े, वह जनता का साग विश्वास खो देगा। हमारी मृत्यु होने ही इसका असाधारण व्यक्ति न मिलने से सारी व्यवस्था तारा से पत्तों की इमारत की तरह बिगड़ जायेगी।

प्रश्न ६०—जापान की शासन-प्रणालि का लक्षित परिचय दो।

जापान में राजा 'समाज' का पुत्र माना जाता है और उसे असीम शक्ति प्राप्त है। राजा को रहस्य का चरम अनुभव है, फिर भी लोकमित्र की तरह वह प्रभाव का प्रयोग करता है। राजा की सहायक शक्ति का नाम 'कायान' है जो राजा की सहायक शक्ति का नाम है—राजा

को अपना राजा मानना पड़ता है किन्तु अब आयरलैंड ने ब्रिटिश नरेश को अपना राजा मानने से इनकार कर दिया है । ब्रिटिश पार्लमेंट उन पर शासन नहीं करनी । ब्रिटिश नरेश भी उनके शासन में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता । इंग्लैंड और उपनिवेशों का सबध 'स्टेच्यूट ऑफ़ वैस्टमिंस्टर' कानून में स्पष्ट किया गया है ।

३—छोटी छोटी वस्तियाँ, जिन्हें कौलोनी कहते हैं ।

४—पराधीन राज्य—हिन्दुस्तान, बर्मा, लंका आदि ।

५—मैंडेट या अदेश प्राप्त-राज्य, जिनके शासन की जिम्मे-
दारी राष्ट्रसंघ ने इंग्लैंड पर डाली है ।

प्रश्न ६३—ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशों और
स्तियों का शासन कैसे होता है ।

उपनिवेशों और ग्रेट ब्रिटेन का सम्बन्ध स्पष्ट करने के लिए आपसी समझौतों के फलस्वरूप पार्लिमेन्ट ने एक कानून पास किया था, जिसे 'वैस्ट मिंस्टर का विधान' कहते हैं इसके अनुसार उपनिवेशों की सरकारें इस ध्येय में मुक्त हो गई हैं कि वे पार्लिमेन्ट के किसी कानून के विरुद्ध कानून नहीं बना सकतीं । अब वे उसके किसी भी कानून को रद्द करने के लिए स्वतन्त्र हैं । ब्रिटिश पार्लिमेन्ट बिना उपनिवेश की सम्मति के कोई भी अपना कानून बर्त लागू नहीं कर सकती । उपनिवेश सांझीदार भी हैमियत में आ गये हैं, इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य को 'ब्रिटिश कॉमनवेल्थ' का नाम दिया गया है । इंग्लैंड का बादशाह सब उपनिवेशों को जोड़ने की कड़ी का काम करता है । सिंहासन की विरासत, गद्दी-त्याग आदि के बारे में भी उपनिवेशों की सम्मति ली जाती है । ऐक्टर्स गद्दी के गद्दी त्याग दिल पर उपनिवेशों की स्वीकृति भी ली गई थी ।

है। जर्मनी में एक दफ्ता नोट इतने अधिक छाप दिये गए थे कि एक रोटी एक लाख मार्क के नोटों में बिकने लगी। नोट जितने छापे जावें, उस हिसाब से सोना या चाँदी भी सरकार को अपने पास रखना चाहिए, अन्यथा सरकार की साख गिर जाती है। नोट भी तो आखिर एक हुंडी है। उसके भुगतान के लिए धातु या सिक्का तो अवश्य पास होना चाहिए।

विदेशों की मुद्रा की कीमतें विभिन्न होने और समय समय पर बदलते रहने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय लेन देन में बड़ी कठिनाई होती है। इस लिए आपसी लेन देन से पहले विभिन्न देशों की मुद्राओं की कीमत तय कर ली जाती है। इन कीमतों का निर्धारण को 'विदेशी विनिमय' कहते हैं। मुद्राशास्त्र या आपसी मूल्य नापने के लिए सोने का नाप रखा गया है और विदेशी व्यापार में सारा भुगतान सोने में होता है। भुगतान का सारा काम करने के लिए विनिमय बैंक (Exchange Bank) शुरू होते हैं। इनका काम है एक देश की मुद्रा को दूसरे देश की मुद्रा में तबदील करना। एक भारतीय व्यापारी ने १०००० रु० का माल इंग्लैंड में बेचा। अपने व्यापारी को रुपये की अपूर्ण पौटों में कीमत सुझायगा। यह बैंक इन पौटों के रुपये (१०००) रु० भारतीय व्यापारी को दे देगा।

१८२१ में इंग्लैंड ने स्वयंमान होने के लिए एक मुद्रा देव आरु इंग्लैंड ने नोटों का प्रयोग करना शुरू किया। नोटों का प्रयोग करने का फायदा यह है कि नोटों का प्रयोग करने से नोटों की कीमतें स्थिर रहती हैं। विदेशी विनिमय बैंक भी नोटों का प्रयोग करने लगे। इस प्रकार एक देश के व्यापारी दूसरे देश के व्यापारी से नोटों का प्रयोग करने में सक्षम बनते हैं।

व्यापारियों को सीधे रकम नहीं भेजते लेकिन भारत के उन निर्यात व्यापारियों से ही भारत में ही रकम ले लेते हैं, जिन्हें इंग्लैंड से अपने माल की कीमत लेनी होती है। इस तरह बहुत सा लेन देन तो अपने देश में ही हो जाता है। यदि किसी देश ने माल भेजा तो बहुत हो, लेकिन मँगाया कम हो तो आर्थिक परिभाषा में कहेंगे कि उसका व्यापार सतुलन (Balance of trade) या व्यापार का तराजू उसके हक में है। वह बाकी रकम नकद सोने के रूप में मँगा लेता है। विदेशी दुष्टियों का कारोबार भी विनिमय बैंक करते हैं।

प्र० ६७—स्वर्णमान का क्या अर्थ है और उसका स्वर्ण कोश से क्या सम्बंध है ?

स्वर्णमान मुद्रा का अर्थ यह है कि सरकार या फेडरलीय बैंक उस बात का जिम्मा लेता है कि जब कोई व्यक्ति चाहे, तब तो उसे वह बदले सोना ले सकता है। किसी भी समय सोने की माँग पूरी करने के लिए ऐसी सरकार या फेडरलीय बैंक नोटों के धरने पर्याप्त स्वर्णभंडार जमा रखता है। परंतु कृपया ऐसा होता नहीं, सिर्फ विदेशी मुनाफान के बच्चे सोना दिया जाता है। स्वर्णमान का एक और भी लक्ष्य है। स्वर्णमान को सोने के रूप में नहीं रखीदता या देखा, लेकिन विदेशी दुष्टियों को सोने के भाव पर रखीदता या देखा है। जिस देश की मुद्रा स्वर्णमान की हो, उसकी कमजोरी में आना बहुत ही कठिन होता है कि उसकी दमन की मुद्रा में सोने के भाव में आने के लिए हमेशा ही ऐसा देश का लक्ष्य रख होता है।

प्र० ६८—स्वर्ण और पीट की विनिमय दर क्या

और व्यायाम-गृह बनाये जा रहे हैं, ताकि जनता को खुली शामिल सके। अन्धे, बहरे, गूंगे लडकों के लिए अलग स्कूल खोले जा रहे हैं। ताजे दूध, साफ पानी और स्वस्थ भोजन-सामग्री की प्राप्ति की व्यवस्था के लिए न्यूनिसिपल कमेटियों को सरकारें काफी सहायता देनी हैं। महामारी के दूर करने का एक दम प्रवर्धन किया जाता है। इन सब का असर यह हुआ है कि समस्त देशों में मृत्यु संख्या घट गई है। भारत में प्रति हज़ार २४ मरते हैं, लेकिन इंग्लैंड में १२ और हालैंड में ८। आयु की औसत बढ़ने लगी है।

भायु की औसत बढ़ने लगी है।
 लस और टर्की ने पिछले सालों में निरक्षरता के दिरुद
 प्रशद बोलकर साक्षरता का जोरो से प्रचार किया है। १८६५
 में लस में ७५ फीसदी निरक्षर थे। १६३७ में वहाँ सिर्फ २२ फीसदी
 निरक्षर रह गये। मिश्र और भारत में आज भी निरक्षरता
 बहुत है, जहाँ कमश. सिर्फ २० और = फीसदी ही शिक्षित हैं।
 शिक्षा के संबंध में मनोविज्ञान के आधार पर अनेक परीक्षण किये
 जा रहे हैं। दस्तकारी के स्कूल भी सब राष्ट्रों में लगातार
 बढ़ रहे हैं।

शिक्षा-संबंधी नये विचारों के कारण बहुत गति हो गई है। स्कूलों में विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ध्यान हो गया है, सामान्य व्यवहार, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों पर जोर दिया जाता है। विद्यार्थियों में यलात कोई विषय सुनेरने की प्रवृत्ति की बजाय उनकी स्वाभाविक शक्तियों के विकास की प्रोत्साहित की जाती है। विद्यार्थी के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सुले देराली में पाठशालाएं बनाई जाने लगी हैं इससे उनके स्वास्थ्य में व्यापारीय हल्लति पाई गई। ५

नाज़ी नेताओं के मत में उनका मुख्य काम अभियों और योद्धाओं को उत्पन्न करना है।

प्रश्न ७६—एशिया में नारी जागरण के आन्दोलन की क्या स्थिति है ?

एशिया में साधारणतः यूरोपीय देशों से स्त्रियों की स्थिति बुरी रही है। इस्लाम कानून के अनुसार स्त्रियों को जायदाद के अधिकार प्राप्त हैं और भारत में स्त्री का स्थान अर्धांगिनी का रहा है। लेकिन इस्लाम में बहु विवाह और परदे की प्रथा ने उनकी स्थिति को बहुत गिरा दिया। भारत में भी मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति गिर गई। लेकिन यूरोप के नारी जागरण का प्रभाव एशिया पर भी पड़ा और विविध देशों में स्त्रियों ने उन्नति और सुधारों की माँग शुरू की। टर्की में १९०८ में स्त्रियों की संस्था बनी। १९२५ में तो कमालपाशा ने कानून द्वारा उन्हें सब समानाधिकार ही नहीं दिये लेकिन उनकी शिक्षा, जहाज, रस्ता आदि सब के विरुद्ध जोरों से जहाद बोल दिया। आज वहाँ स्त्री हर एक काम में हिस्सा घँटाती है। टर्की के आन्दोलन का सभी मुस्लिम देशों पर असर पड़ा और वहाँ भी स्त्रियाँ अत्येक दिशा में आगे बढ़ रही हैं। भारत में आज महिला जागृति आन्दोलन काफ़ी जोर पकड़ गया है। राष्ट्रीय आन्दोलन में पड़ कर तो भारतीय महिला बहुत आगे बढ़ गई हैं। स्त्री-शिक्षा का प्चार भी लगातार बढ़ रहा है। मताधिकार भी नये सुधारों के अनुसार असेम्बली चुनाव में ६० लाख स्त्रियों को मिल गया है। असेम्बली, म्युनिसिपल बनेटी आदि की सदस्यता के लिए भी बड़ी हो सकती हैं। बहुत सी म्युनिसिपल बनेटियों में उन्हें पुरस्कार मताधिकार प्राप्त हैं।



जियम की ओर से, जहाँ फ्रांस की उत्तनी टूट लाइन न थी, जर्मन सेना फ्रांसीसी सीमा में घुस आई। फ्रांस ने बड़ी बहादुरी से डटकर मुकाबला किया, लेकिन दूसरी ओर इटली के भी फ्रांस के विरुद्ध युद्ध में कूद पड़ने से उसे विवश होकर हथियार डालने पड़े। फ्रांस के पर्याप्त हिस्से पर जर्मनों का अस्थायी अधिकार है। फ्रांस के मैदान से हट जाने पर ब्रिटेन अकेला रह गया।

इधर इटली के भी युद्ध में कूद पड़ने से अफ्रीका में भी युद्ध छिड़ गया। अवीसीनिया, इरिट्रिया और लीबिया में इटालियनों और अंगरेजों में घनघोर युद्ध हुआ। अवीसीनिया और इरिट्रिया में तो ब्रिटिश सेनाओं को सफलता मिली है। अवीसीनिया प्रायः सारा ही अंग्रेजों के हाथ में आ गया है। लेकिन लीबिया में जर्मन सेनाओं के आजाने के कारण स्थिति अनिश्चित होगई है। अंग्रेजों द्वारा जीता हुआ लीबिया का प्रायः सारा भाग जर्मनी ने फिर वापिस ले लिया है। इधर इटली ने ग्रीस पर भी हमला कर दिया था। ग्रीस ने ब्रिटेन की सहायता से इटली का मुकाबला किया और उसे कुछ पीछे हटने पर विवश किया, लेकिन अप्रैल के प्रथम सप्ताह में ही जर्मनी के ग्रीस पर आक्रमण कर देने के कारण युद्ध का नक्शा बदल गया है। ग्रीस के साथ ही यूगोस्लाविया पर भी जर्मनी ने आक्रमण कर दिया। यूगोस्लाविया ने लगभग एक सप्ताह लड़कर हथियार डाल दिये हैं। उसमें मोटिया अलग राष्ट्र बना दिया गया है, शेष भाग का बँटवारा अभी नहीं हो पाया। ग्रीस के नैशन में भी जर्मनों पर्याप्त स्थान दब चुका है। परिस्थिति गंभीरतम और अनिश्चित है।

इधर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने ब्रिटेन को युद्ध-सामग्री आदि की भारी सहायता देनी शुरू कर दी है, जिसने ब्रिटेन का दल

के बदन की तरह बढ़ता रहा है । सेनाओं के खर्च दुगुने तिगुने कर दिये गये । कर्ज लेकर, नये टैंक्स लगा कर, सेना पर खर्च किया जाने लगा । और अब तो युद्ध छिड़ने से बाद प्रायः समस्त राष्ट्रों की पूर्ण शक्ति युद्ध और सेना की ओर केन्द्रित होगई है । फ्रान्स यूरोप के लड़ाकू राष्ट्र ही नहीं, तटस्थ राष्ट्रों को भी अपनी अपनी शक्ति पड़ी है कि न जाने कम उन पर भी अचानक हमला हो जाये । ब्रिटिश साम्राज्य के सब देश भी युद्ध की तैयारियाँ में लगे हैं । दूनोनों ओरों रुपया सेना और विनाशक सामग्री पर व्यय हो रहा है । अमेरिका जैसे दूरस्थित देश भी रोज सेना के लिए नये नये हथियार पास कर रहा है । जर्मन जनरल मोरिग ने दो साल पहले कहा था

से अन्दर का गोला और आगे जाता है। इस तरह ५-६ गोले फट फटाकर अन्तिम गोला लक्ष्य तक पहुँच जाता है और भीषण नरसंहार शुरू कर देता है।

इस समय किस राष्ट्र के पास कितनी स्थल-सेना है, यह कहना कठिन है। कोई राष्ट्र अपनी ठीक संख्या प्रकाशित नहीं करता और फिर युद्ध के समय २० से ३५ साल तक के लोगो की अनिवार्य सैनिक भरती के कारण तो यह जानना और भी कठिन हो गया है। फिर भी रूस की ७५ लाख और जर्मनी की ७० लाख स्थलसेना अन्दाज़ की जाती है।

प्रश्न ८६—वर्तमान युद्धों में जलसेना का क्या महत्त्व है ?

जिस तरह स्थल सेना के महत्त्व को एवाई जहाजों ने कम किया है, उसी तरह जलसेना के महत्त्व को भी कुछ कम कर दिया है। बड़े बड़े समुद्री जहाजों पर एवाई जहाज बम बरसा कर उन्हें तबाह कर सकते हैं। फिर भी समुद्री-सेना का महत्त्व तब तक कायम है, जब तक ब्रिटिश साम्राज्य कायम है। ब्रिटेन इसी के दल से अपने विशाल साम्राज्य पर अधिकार जमाये हुए है, और सिर्फ २० मील दूर होने पर भी जर्मनी ब्रिटेन पर समुद्री जहाजों की कमी के कारण हमला नहीं कर पाया। जहाजी शक्ति ने पहले स्थान ब्रिटेन का है, फिर वामशः अमेरिका, जापान, इटली तथा रूस आते हैं। जलसेना में जंगी जहाज, जंगी मूलर, एवाई जहाज होने वाले जहाज, मूलर टारपीटो, पनडुब्बियाँ, सुग्गे विमान वाहक, विध्वंसक (डिस्ट्रॉयर) जहाज आदि विभिन्न हो प्रकार के जहाज होते हैं। आजकल जंगी मूलर, कटरएक, विमानवाहक, डिस्ट्रॉयर, न

हवाई जहाजों के साथ-साथ रासायनिक युद्धों की ओर भी राष्ट्रों का ध्यान जा रहा है। ल्यूसाइट जैसी जहरीली गैसों के बनाने पर करोड़ों रुपया खर्च हो रहा है, जिस की तीन चूँदे मनुष्य को मार देगी। फोसजीन गैस मनुष्य का दम घोट कर फेफड़े वेकार कर के मार देती है। मस्टर्ड गैस के पास से गुजरने पर कपड़ों में आग लग जाती है।

जहरीली गैसों से बचने के लिए लोगों को नकावे घांटी जा रही हैं। पर गोदी के बच्चों के लिए नकावे लगाना कठिन है, फिर ब्लूक्रॉस जैसी कई जहरीली गैसों नकाव पार कर भी अन्दर घुस जाती हैं। गैसों और बमवर्षा में बचने के लिए सार्वजनिक रक्षा-गृह बनाये गये हैं, जहाँ खतरे की घटी बजते ही लोगों को पहुँच जाना होता है। हवाई-जहाजों से बमवर्षा से घनी आबादी को ज्यादा नुकसान होता है, इसलिए घनी आबादियों को दिखेरा जा रहा है। परन्तु अभी तक युद्ध में गैसों का खुला प्रयोग किया नहीं गया, क्योंकि एक बार गैस युद्ध होने पर दोनों ओर से यह शुरू होगा और दोनों लड़ाकों को भारी नुकसान पहुँचायगा।

परन्तु इंग्लैंड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री दाव्लिन के कथनानुसार कितना ही कुछ परे, हवाई-जहाजों से हमले से पूरी तरह रक्षा पाना असम्भव है।

प्रश्न ८८—वर्तमान युद्ध-विषा-विशारदों की युद्ध-नीति क्या है ?

इस सवध में विभिन्न युद्ध विषा-विशारदों के विविध मत हैं। हिटलर, लुडलोफ़ आदि जर्मन सैनिक-विशारदों का मत है कि शत्रु पर आतंमिक आक्रमण करने लक्ष्य बन्दे-बन्दे नगरों, हवाई

हवाई जहाजों के साथ-साथ रासायनिक युद्धों की ओर भी राष्ट्रों का ध्यान जा रहा है। ल्यूसाइट जैसी जहरीली गैसों के बनाने पर करोड़ों रुपया खर्च हो रहा है, जिस की तीन घूँदे मनुष्य को मार देंगी। फ़ोसजीन गैस मनुष्य का दम घोट कर फेफड़े वेकार कर के मार देती है। मस्टर्ड गैस के पाम से गुजरने पर कपड़ों से आग लग जाती है।

जहरीली गैसों से बचने के लिए लोगों को नकावें बाँटी जा रही हैं। पर गोदी के बच्चों के लिए नकावे लगाना कठिन है, फिर ब्लूक्रॉस जैसी कई जहरीली गैसें नकावे पार कर भी अन्दर घुस जाती हैं। गैसों और बमवर्षा से बचने के लिए सार्वजनिक रक्षा-गृह बनाये गये हैं, जहाँ खतरे की घंटी बजते ही लोगों को पहुँच जाना होता है। हवाई-जहाजों से बमवर्षा से घनी आबादी को ज्यादा नुकसान होता है, इसलिए घनी आबादियों को बिखेरा जा रहा है। परन्तु अभी तक युद्ध में गैसों का खुला प्रयोग किया नहीं गया, क्योंकि एक बार गैस युद्ध होने पर दोनों ओर से यह शुरू होगा और दोनों लड़ाकों को भारी नुकसान पहुँचायगा।

परन्तु इंग्लैंड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री दाव्टविन के कथनानुसार कितना ही कुछ करे, हवाई-जहाजों के हमले से पूरी तरह रक्षा पाना असंभव है।

प्रश्न ८८—वर्तमान युद्ध-विघा-विशारदों की युद्ध-नीति क्या है ?

इस संवध में विभिन्न युद्ध विघा-विशारदों का विविध मत है। हिटलर, लुडेंबर्ग आदि जर्मन सैनिक-विशारदों का मत है कि शत्रु पर व्यापक आक्रमण करके सत्ते बड़े-बड़े नगरों, हवाई

को हमेशा रखना बहुत खर्चीला है, इसलिए अधिकतर देशों में अनिवार्य सैनिक-शिक्षा देने का नियम बनाया गया है। युद्धों में अरबों रुपया पानी की तरह बहाना पड़ता है। पर इतना रुपया आवे कहाँ से ? कर्ज लो, टैक्स लगाओ अथवा कागजी मुद्रा बढ़ाओ। तीनों तरीके एक साथ अमल में लाये जाते हैं। परन्तु फिर भी युद्ध के खर्चे इतने भारी होते हैं कि सपन्न से संग्रह राष्ट्र के लिए भी असंभव हो जाते हैं।

प्रश्न ९१—वर्तमान प्रलयंकर युद्ध के बाद क्या फिर शांति और समृद्धि का युग आयगा ?

आज समस्त मानवजाति परस्पर अविश्वास, शका और विद्वेष के समुद्र में डूबी हुई है। यह युद्ध न जान कब तक चलेगा और इसके बाद मानवजाति और ससार क्या रूप धारण करेगा आदि सवाल का जवाब देना आज बहुत कठिन है। आज परस्पर-विरोधी धाराएँ चल रही हैं, कौन-सी प्रबल होगी यह नहीं कहा जा सकता। संभव है कि सर्वसाधारण जनता सामाजिक व्यवस्था को, जिस के कारण आज बड़ा भोग रही है, बदल दे, वह सकुचित विचारको, पूँजीपति-साम्राज्यवादी नेताओं और राजनीतिज्ञों के हाथ से समाज-संचालन का सूत्र छीन कर नई दुनिया बसाने की कोशिश करे, जिसमें न मान्ना-ज्यवाद रहे, न पूँजीवाद और न दूमरो को शोषण करने की प्रवृत्ति। संकीर्ण संप्रदाय, संकीर्ण मजहब, संकीर्ण राष्ट्रीयता और सब से बढ़ कर अन्तःकरण की संकीर्णता को सदा के लिए नमस्कार करना होगा।

परन्तु प्रश्न यह है कि क्या सदियों के अभ्यास एक दिन में

बहुत सी शिक्षाएँ मान ली, लेकिन उसकी चेनावती पर ध्यान नहीं दिया। लाओट्जे के बाद से आज तक भी बहुत से विचारको ने मनुष्य की वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति को अशान्ति-मूलक कहकर वापस जाकर ग्राम-संस्कृति को अपनाने की सलाह दी है। लेकिन उनका उपदेश नफल नहीं हुआ। वर्तमान सभ्यता की दौड़ जारी है। मनुष्य समस्त प्रकृति पर पूर्ण विजय कर लेना चाहता है और धर्म, जाति भौगोलिक सीमा और प्रकृति की बाधाओं को पारकर एकता-सूत्र में बँधी हुई सुखी मानव जानि के स्वप्न को पूर्ण करना चाहता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति में आज भी हजारों बाधाएँ हैं। मनुष्य अभी तक भौतिक स्वार्थ पर ही विजय नहीं पा सका। इसी कारण हम विभिन्न राष्ट्रों में सद्धारकारी संघर्ष और अशान्ति-मूलक मतभेद देखते हैं। राष्ट्रायता, जाति और धर्म की संकुचित मर्यादा को यह अभी पार नहीं कर पाये, लेकिन इन पर भी विजय पाने का प्रयत्न जारी है। अन्तर्राष्ट्रीय बंधुत्व का भाव इसी का एक प्रमाण है। राष्ट्रसंघ का एक प्रयत्न असफल हुआ है। लेकिन स्वार्थमय युद्धों का महा-भीषण परिणाम मानवजाति के पथ को परिवर्तित करने के लिए बाधित करेगा और वह इन संकुचित दायरों से बाहर निकल एक परिवार के रूप बदल जायगी। आज भी विश्व-संघर्ष, घृणा, शत्रुता और स्वाध का कहानियों से भरे हुए पृष्ठों के भीतर से मानवीय एकता के लक्ष्य के लिए तड़पती हुई मानव आत्मा हमें स्पष्ट नजर आ रही है।

